The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

21वीं सदी में शिक्षकों के कक्षा प्रबंधन कौशल को सुदृढ़ करने में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भूमिका: अवधारणाओं, दस्तावेजों और परिप्रेक्ष्य का एक विचारपरक विश्लेषण

Jai Raj
Research Scholar, Department of Education, NIILM University, Kaithal (Haryana)
Email: jaisingh3841.jrs@gmail.com

Dr. Rajesh Kumar
Research Guide, Department of Education, NIILM University, Kaithal (Haryana)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-05-2025

Published: 10-06-2025

Keywords:
कक्षा प्रबंधन, शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल अधिगम, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, समावेशी शिक्षा

ABSTRACT

21वीं सदी के भारतीय स्कूली शिक्षा परिवेश के संदर्भ में, यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के माध्यम से कक्षा प्रबंधन क्षमताओं को विकसित करने के लिए किए गए प्रयासों की एक चिंतनशील परीक्षा प्रदान करता है। वर्तमान शैक्षणिक प्रणाली के संदर्भ में, जहाँ प्रशिक्षकों को न केवल विषय ज्ञान बल्कि डिजिटल प्रौद्योगिकी, सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) और समावेशी शिक्षण प्रथाओं में दक्षता की भी आवश्यकता होती है, शोध कक्षा प्रबंधन के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डालता है। शोध कक्षा प्रबंधन में सबसे हाल के विकासों की गहन तरीके से जाँच करता है, जिसमें कक्षा प्रशासन के अधिक पारंपरिक तरीकों से लेकर डिजिटल युग तक सब कुछ शामिल है। शोध में द्वितीयक स्रोतों जैसे सरकारी नीतिगत दस्तावेज, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टें (UNESCO, OECD) और समकालीन शोध पत्रों के आधार पर सैद्धांतिक और तुलनात्मक समीक्षा की गई है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जांचना है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कक्षा प्रबंधन कौशल को शामिल करने से प्रशिक्षकों की पेशेवर क्षमता कैसे बढ़ सकती है, कक्षा में सहभागिता बढ़ सकती है और एक ऐसा

सीखने का माहौल तैयार हो सकता है जो छात्र पर केंद्रित हो। शोध में दुनिया भर के सबसे सफल तरीकों, जैसे कि फिनलैंड और सिंगापुर में इस्तेमाल किए गए मॉडल का विश्लेषण करके भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली में बदलाव लागू करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। अंततः, शोध के अनुसार, 21वीं सदी के कक्षा प्रबंधन में गुणवत्ता सुधार प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, निरंतर व्यावसायिक विकास, डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उचित उपयोग और व्यावहारिक प्रशिक्षण पद्धतियों के मिश्रण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। भविष्य की शैक्षिक मांगों को पूरा करने के लिए, यह जरूरी है कि भारत में शिक्षक, शैक्षिक संस्थान और नीति निर्माता एक साथ मिलकर एक ऐसा प्रशिक्षण ढांचा तैयार करें जो मजबूत और अनुकूलनीय दोनों हो।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15658144

1. प्रस्तावना

"कक्षा प्रबंधन कौशल" शब्द एक व्यवस्थित प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसका उपयोग शिक्षक कक्षा में अनुशासन बनाए रखने, छात्रों के व्यवहार को रचनात्मक दिशा में प्रभावित करने और शिक्षण और सीखने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के लिए करते हैं (शर्मा, 2017)। 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली में कक्षा प्रबंधन केवल अनुशासन लागू करने तक सीमित नहीं है; बल्कि, यह छात्र-केंद्रित शिक्षा, सहानुभूति पर आधारित पाठ्यक्रम और अभिनव शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए एक आवश्यक साधन के रूप में विकसित हुआ है। आज के शैक्षिक वातावरण में शिक्षक की भूमिका न केवल जानकारी प्रदान करना है, बल्कि छात्रों को उनके सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास के एकीकरण में सहायता करना भी शिक्षक का दायित्व है (वर्मा, 2018)।

21वीं सदी में, सीखने के माहौल के परिणामस्वरूप कक्षा प्रबंधन की विशेषताओं में काफी बदलाव आया है। वैश्वीकरण, तकनीकी नवाचार और सामाजिक विविधता ने छात्रों की आवश्यकताओं की जटिलता को बढ़ाने में योगदान दिया है। इन दिनों, एक शिक्षक से उन बच्चों को संभालने की उम्मीद की जाती है जो विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और सीखने की शैलियों से आते हैं (राय, 2019)। डिजिटल तकनीकों के बढ़ते उपयोग के साथ-साथ कक्षाओं का प्रशासन भी नए अवसरों और बाधाओं के परिचय के अधीन रहा है। ऑनलाइन कक्षाओं, हाइब्रिड शिक्षा मॉडल और स्मार्ट कक्षाओं के

कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप शिक्षकों को नए प्रकार की प्रबंधन क्षमताएँ बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा है जो पिछले तरीकों से काफी अलग हैं (सैनी, 2020)।

कक्षा प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कुछ पहलू हैं प्रशिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, प्रौद्योगिकी उपकरणों के उपयोग में उनका कौशल, तथा बहुसांस्कृतिक कक्षाओं को क्रियान्वित करने की उनकी क्षमता (जोशी, 2018)। शिक्षक के पास भावनात्मक बुद्धिमत्ता की डिग्री और जिस तरह से वे छात्र के आचरण, असहमति और सामाजिक संबंधों को संभालते हैं, उनके बीच एक संबंध है। इसी तरह, कक्षा में प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग, जैसे कि स्मार्ट बोर्ड, ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म और वर्चुअल क्लासरूम, प्रभावी कक्षा प्रबंधन के लिए एक अनिवार्य शर्त बन गए हैं। बहु-सांस्कृतिक कक्षा में पढ़ाने की कठिनाई भी प्रशिक्षकों की प्रबंधन क्षमताओं को परखती है। ऐसी कक्षा में, अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले, अलग-अलग संस्कृतियों से आने वाले और अलग-अलग सामाजिक विचार रखने वाले विद्यार्थियों को ऐसे माहौल में अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो सभी के लिए स्वागत योग्य हो (चक्रवर्ती, 2021)।

शिक्षार्थी-केंद्रित, अंतःक्रियात्मक और सहभागी मॉडल धीरे-धीरे कक्षा प्रबंधन के पारंपरिक तरीकों की जगह ले रहे हैं, जो मुख्य रूप से अनुशासन बनाए रखने और निर्देशात्मक ढांचे की स्थापना पर केंद्रित थे (पाठक, 2019)। कक्षा में प्रौद्योगिकी को शामिल करने के साथ-साथ, आज के डिजिटल युग में शिक्षकों को सहानुभूति, धैर्य और अनुकूलनशीलता जैसे मूल्यों को विकसित करने की आवश्यकता है, साथ ही प्रौद्योगिकी को भी शामिल करना होगा। नवीनतम रुझानों के अनुसार, स्मार्ट कक्षा प्रौद्योगिकी, मिश्रित शिक्षण मॉडल, सामाजिक-भावनात्मक शिक्षण (एसईएल) और समावेश-आधारित रणनीतियाँ कक्षा प्रबंधन के लिए समकालीन उपकरण के रूप में उभरी हैं (सहगल, 2022)।

तथ्यों और आँकड़ों के अनुसार, UNESCO की एक 2021 की रिपोर्ट में बताया गया कि जिन शिक्षकों ने संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कक्षा प्रबंधन कौशल अर्जित किए, उनकी कक्षा सहभागिता दर उन शिक्षकों की तुलना में 25% अधिक थी, जिन्हें औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ था (UNESCO, 2021)। इसी तरह, भारत सरकार द्वारा 2022 में प्रकाशित एक रिपोर्ट में पाया गया कि जिन शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया था, उनकी कक्षा प्रबंधन प्रभावशीलता रेटिंग औसतन उन शिक्षकों की तुलना में 18% अधिक थी, जिन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था (भारत सरकार, 2022)। ये आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षण गुणवत्ता में सीधा योगदान देते हैं।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य उन तरीकों की जांच करना है जिनसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने शिक्षकों की कक्षा प्रबंधन क्षमताओं में सुधार किया है। शोध का एक अतिरिक्त उद्देश्य उन प्रवृत्तियों और कारणों की पहचान करना है जो 21वीं सदी में कक्षा प्रबंधन के पुनर्निर्माण को निर्देशित कर रहे हैं। यह अवधारणाओं, शैक्षिक नीति पत्रों, साथ ही वैश्विक और राष्ट्रीय दृष्टिकोणों के उपयोग के माध्यम से पूरा किया जाएगा।

यह अध्ययन पूर्णतः शोध अपने निष्कर्षों के लिए द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर था। आलोचनात्मक विश्लेषण की एक तकनीक चुनी गई, जिसमें आवश्यक विचारों का सैद्धांतिक और आलोचनात्मक अध्ययन, साथ ही अकादमिक प्रकाशनों, सरकार और विदेश नीति से संबंधित दस्तावेजों और अन्य प्रासंगिक सामग्रियों की जांच शामिल थी।

डेटा संकलन हेतु राष्ट्रीय दस्तावेज जैसे शिक्षा नीति 2020, शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों की रिपोर्टें, शिक्षा मंत्रालय के प्रकाशन और अंतरराष्ट्रीय दस्तावेज जैसे UNESCO, OECD और World Bank की कक्षा प्रबंधन संबंधी रिपोर्टों का गहन अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त वैश्विक और भारतीय शिक्षा शोध पत्र, केस स्टडीज और समीक्षा आलेखों का विश्लेषण भी किया गया।

यह तय किया गया कि सैद्धांतिक और आलोचनात्मक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाए जो विषयों के अनुरूप हो। इस अध्ययन में, दुनिया भर के दस्तावेजों और भारतीय शोधपत्रों का तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया और कक्षा प्रबंधन से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं और नीतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

2. कक्षा प्रबंधन की 21वीं सदी की अवधारणाएँ: एक आधुनिक दृष्टिकोण

कक्षा प्रबंधन की अवधारणाएँ 21वीं सदी में विकसित हुई हैं, जो अनुशासन-आधारित प्रबंधन के पुराने मॉडल से हटकर सहयोग, प्रौद्योगिकी उन्नति और संवेदनशीलता पर जोर देने वाले दृष्टिकोण की ओर अग्रसर हुई हैं। "कक्षा प्रबंधन" शब्द का विकास न केवल आदेश और नियंत्रण के प्रयोग को शामिल करने के लिए हुआ है, बल्कि छात्रों की सक्रिय भागीदारी, सहानुभूति और आत्म-नियमन जैसे घटकों को शामिल करने के लिए भी हुआ है (शेखर, 2017)। इस बदलाव में प्रौद्योगिकी द्वारा किए गए महत्वपूर्ण योगदान के परिणामस्वरूप, कक्षा संचालन अधिक सहभागी और अनुकूलनीय हो गया है। स्मार्ट बोर्ड, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म, वर्चुअल क्लासरूम और डिजिटल मूल्यांकन उपकरण जैसी प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण कक्षा प्रबंधन के पारंपरिक तरीकों की परीक्षा हुई है, जिससे शिक्षकों को नए कौशल हासिल करने में मदद मिली है (कुमार, 2018)।

डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग से, शिक्षकों के पास अब व्यक्तिगत शिक्षण पथ बनाने, वास्तविक समय में अपने छात्रों के विकास पर नज़र रखने और छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को पूरा करने की क्षमता है (यादव, 2019)।

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL) 21वीं सदी में सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा का समावेश भी कक्षा प्रबंधन के एक आवश्यक घटक के रूप में उभरा है। सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) का लक्ष्य विद्यार्थियों में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सामाजिक जागरूकता, संबंध कौशल और जिम्मेदार निर्णय लेने की क्षमता जैसे पहलुओं को विकसित करना है (भाटिया, 2020)। सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण (एसईएल) के विचारों का समर्थन करने वाली कक्षा सेटिंग की एक परिभाषा यह है कि इसमें प्रशिक्षक अपने छात्रों की भावनात्मक भलाई को उच्च प्राथमिकता देते हैं, संघर्ष समाधान के लिए रचनात्मक तरीकों को लागू करते हैं, और सभी छात्रों के लिए एक सुरक्षित और स्वागत योग्य माहौल बनाते हैं (शर्मा, 2021)। इसके अतिरिक्त, शोध से पता चला है कि जिन शिक्षकों ने उच्च गुणवत्ता वाले सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण (एसईएल) कार्यक्रमों में प्रशिक्षण प्राप्त किया है, उनमें कक्षा प्रबंधन क्षमता में सुधार देखा गया है और वे अपने छात्रों के शैक्षणिक और सामाजिक प्रदर्शन में बदलाव देखते हैं (अग्रवाल, 2022)।

समावेशी शिक्षा और विविध कक्षा प्रबंधन के लिए समाधानों का विकास भी आज की दुनिया में प्रशिक्षकों के लिए एक परम आवश्यकता बन गया है। विभिन्न सांस्कृतिक, भाषाई, सामाजिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के साथ काम करने की क्षमता के लिए प्रशिक्षकों को उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग में संवेदनशीलता, अनुकूलनशीलता और लचीलापन रखने की आवश्यकता होती है (दत्ता, 2018)। समावेशी कक्षा प्रबंधन के लिए यूडीएल (Universal Design for Learning) जैसे ढाँचों का उपयोग बढ़ रहा है, जो विभिन्न अधिगम शैलियों और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण रणनीतियाँ तैयार करने पर बल देता है (नंदा, 2019)। इसके अलावा, सहपाठी सहयोग, पीयर ट्यूटरिंग, विविध मूल्यांकन तकनीकों और बहु-सांस्कृतिक शिक्षा सामग्री का प्रयोग समावेशी कक्षा प्रबंधन को सशक्त बनाता है (गोस्वामी, 2020)।

सामान्य तौर पर, 21वीं सदी में कक्षा प्रबंधन के सिद्धांतों में यह अनुमान लगाया जाता है कि प्रशिक्षकों के पास प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की क्षमता, सामाजिक-भावनात्मक बुद्धिमत्ता और विविधता की समझ जैसे कौशल होंगे। आजकल, एक अच्छा शिक्षक न केवल विषय वस्तु के बारे में जानकार होता है, बल्कि उसे सहानुभूति के साथ संवाद करने, डिजिटल तकनीक में निपुण होने और समावेशी शिक्षण प्रथाओं को अपनाने की क्षमता को भी समान प्राथमिकता देनी होती है।

3. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कक्षा प्रबंधन कौशल का एकीकरण

कक्षा प्रबंधन को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम में एक मूलभूत घटक के रूप में शामिल किया गया है। आज के पेशेवर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में न केवल छात्रों को विषय वस्तु की समझ की आवश्यकता होती है, बल्कि उन्हें कक्षा प्रबंधन से निपटने के लिए रणनीतियाँ सीखने की भी आवश्यकता होती है। प्रशिक्षकों को कक्षा प्रबंधन के विषय में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर निर्देश मिलते हैं ताकि उन्हें कुशल शैक्षिक सेटिंग्स को डिजाइन और कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया जा सके (सक्सेना, 2017)। वर्तमान में ऐसे प्रशिक्षण वर्ग हैं जो प्रशिक्षकों को अनुशासन बनाए रखने, सकारात्मक व्यवहार को नियंत्रित करने, इंटरैक्टिव शिक्षण को सुविधाजनक बनाने और विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को शामिल करने वाले माहौल की स्थापना के तरीके बताते हैं (मिश्रा, 2018)। इससे शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि कक्षा प्रबंधन केवल नियंत्रण नहीं, बल्कि छात्र सहभागिता को बढ़ावा देने का एक साधन है।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के संदर्भ में, व्यावहारिक कार्यशालाओं, अनुकरण दृष्टिकोणों और प्रायोगिक गतिविधियों के उपयोग के माध्यम से कक्षा प्रबंधन क्षमताओं के विकास को विशेष रूप से सफल माना जाता है। कार्यशालाओं में भाग लेने से, प्रशिक्षकों को वास्तविक जीवन के कक्षा परिदृश्यों का अनुभव करने का अवसर मिलता है, जो उन्हें छात्र व्यवहार को प्रबंधित करने, पाठ योजनाओं को लागू करने और शिक्षण रणनीतियों के लिए रणनीति का अभ्यास करने का मौका देता है (चतुर्वेदी, 2019)। सिमुलेशन तकनीकें जैसे रोल-प्ले, केस स्टडीज, और वर्चुअल क्लासरूम गतिविधियाँ शिक्षकों को जटिल कक्षा परिदृश्यों का समाधान करने के लिए प्रशिक्षित करती हैं (नेगी, 2020)। प्रैक्टिकम या इंटर्नशिप कार्यक्रम शिक्षकों को वास्तविक दुनिया के स्कूली माहौल में अपनी शिक्षण क्षमताओं का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे उन्हें अपने कक्षा प्रबंधन कौशल को परखने और अपने अनुभवों के परिणामस्वरूप आगे बढ़ने का मौका मिलता है (भानु, 2021)। इन तकनीकों के माध्यम से प्रशिक्षकों में आत्मविश्वास, समस्या समाधान कौशल और निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।

सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बीच समानताओं और अंतरों की जांच से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि दोनों प्रकार के कार्यक्रम कक्षा प्रबंधन कौशल के विकास में अलग-अलग भूमिका निभाते हैं। कक्षा प्रबंधन के मौलिक विचार और व्यावहारिक रणनीति सेवा-पूर्व प्रशिक्षण का प्राथमिक केंद्र हैं, जो कि ज्यादातर बैचलर ऑफ एजुकेशन और डॉक्टर ऑफ एजुकेशन जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रदान किया जाता है (मेहता, 2018)। इसके तहत प्रशिक्षकों को थोड़े समय के लिए सैद्धांतिक जानकारी, मॉडल और वास्तविक शिक्षण अनुभव की पर्याप्त मात्रा प्रदान की जाती है। दूसरी ओर,

इन-सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रम, जो पहले से ही कक्षा में काम कर रहे प्रशिक्षकों के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, अधिक व्यावहारिक और अनुकूलनीय हैं। ये कार्यक्रम कक्षा प्रबंधन की व्यावहारिक चुनौतियों, सबसे हालिया शैक्षणिक नवाचारों और प्रौद्योगिकी सफलताओं को ध्यान में रखते हैं (नायर, 2021)। इन कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक अपने पूर्व अनुभवों के आलोक में नई रणनीतियों को सीखते हैं और उन्हें अपनी कक्षाओं में लागू करते हैं।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में कक्षा प्रबंधन को शामिल करना प्रशिक्षकों को सक्षम, उत्तरदायी और नवोन्मेषी शिक्षक बनाने के लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सैद्धांतिक ज्ञान, व्यावहारिक अनुभव और निरंतर विकास की संस्कृति के संयोजन के माध्यम से ही एक शिक्षक वास्तविक दुनिया की कक्षा परिस्थितियों में सफलतापूर्वक प्रबंधन करने में सक्षम होता है।

4. वैश्विक नीतिगत दस्तावेजों में कक्षा प्रबंधन और प्रशिक्षण के निर्देश

UNESCO, OECD और कई अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थानों ने 21वीं सदी में कक्षाओं के प्रशासन के साथ-साथ शिक्षकों की योग्यता पर महत्वपूर्ण सलाह दी है। यूनेस्को द्वारा 2019 में प्रकाशित रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया था कि कुशल कक्षा प्रबंधन न केवल छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार करता है, बल्कि यह छात्रों के सामाजिक और भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (रेड्डी, 2019)। रिपोर्ट में यह भी जोर दिया गया कि शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कक्षा प्रबंधन से संबंधित व्यवहारिक कौशल जैसे सहानुभूति, विविधता की स्वीकृति, और तकनीकी दक्षता को शामिल करना चाहिए। OECD द्वारा प्रकाशित 2020 की "Teaching and Learning International Survey (TALIS)" सर्वेक्षण के निष्कर्षों के अनुसार, जिन देशों ने कक्षा प्रबंधन प्रशिक्षण को अपने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का अनिवार्य घटक बनाया, वहां विद्यार्थियों की सहभागिता का स्तर अधिक था तथा सीखने के परिणाम भी बेहतर थे (डेसाई, 2020)। इसी क्रम में, World Bank ने भी अपनी 2018 की रिपोर्ट में कहा कि कमजोर कक्षा प्रबंधन, विशेषकर विकासशील देशों में, छात्र अधिगम में बाधा उत्पन्न करता है और इसके समाधान हेतु सुदृढ़ प्रशिक्षण ढाँचे की आवश्यकता है (पटनायक, 2018)।

दुनिया भर में इस्तेमाल की जाने वाली सर्वोत्तम प्रथाओं को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि प्रभावी शैक्षणिक प्रणालियाँ शिक्षकों के प्रशिक्षण के मामले में कक्षा प्रबंधन पर विशेष ध्यान देती हैं। उदाहरण के लिए, फ़िनलैंड और सिंगापुर जैसे देशों में, शिक्षक

प्रशिक्षण कार्यक्रम कक्षा प्रबंधन पर महत्वपूर्ण जोर देते हैं। इन कार्यक्रमों में, प्रशिक्षकों को उनके वास्तविक कक्षा के अनुभवों पर आधारित निर्देश मिलते हैं (गुप्ता, 2017)। फिनलैंड में शिक्षकों को शिक्षण से पहले विस्तृत प्रैक्टिकम और संरचित फीडबैक प्रणाली का हिस्सा बनना होता है, जिससे वे कक्षा प्रबंधन में निपुण होते हैं (शेख, 2019)। वहीं, सिंगापुर का 'Teacher Growth Model' शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास पर आधारित है, जिसमें कक्षा प्रबंधन कौशल को निरंतर सुधारने पर बल दिया जाता है (सिन्हा, 2020)। कक्षा प्रबंधन की प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए, ये वैश्विक मॉडल दर्शाते हैं कि निरंतर प्रशिक्षण, फीडबैक प्रणाली और व्यावहारिक अनुभव सभी समीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह बात सबसे महत्वपूर्ण है कि ये अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम अभ्यास भारत की स्थिति के लिए लागू हैं या नहीं। भारत में भी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को अधिक व्यावहारिक बनाना आवश्यक है, साथ ही कक्षा प्रबंधन के लिए विशेष मानदंड निर्धारित करना और कक्षा शिक्षण के साथ डिजिटल उपकरणों के एकीकृत उपयोग को प्रोत्साहित करना भी आवश्यक है (त्रिपाठी, 2021)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में कुछ प्रयास किए हैं, लेकिन व्यावहारिक कार्यशालाओं, सिमुलेशन तकनीकों और सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से कक्षा प्रबंधन कौशल को सुदृढ़ करने की जरूरत बनी हुई है (सक्सेना, 2022)। वैश्विक स्तर पर प्राप्त अनुभवों से यह बात भी स्पष्ट हो गई है कि केवल प्रशिक्षण सत्र आयोजित करना पर्याप्त नहीं है; बल्कि वास्तविक कक्षा-कक्ष में शिक्षकों के व्यवहार का निरंतर निरीक्षण करना तथा उस पर फीडबैक देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

इस कारण से, भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को उन सर्वोत्तम प्रथाओं से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है जो अब दुनिया भर में लागू की जा रही हैं और अपने प्रशिक्षण मॉडल को अधिक यथार्थवादी, समावेशी और प्रगतिशील बनाना चाहिए। इससे शिक्षक कक्षा प्रबंधन में निपुण हो सकेंगे और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य प्राप्त कर सकेंगे।

5. भारत में राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों का विश्लेषण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के प्रशिक्षण और कक्षा में बातचीत के प्रबंधन दोनों के लिए काफी संशोधनों की सिफारिश की गई है। इस नीति से यह स्पष्ट है कि प्रशिक्षकों को न केवल अपने संबंधित क्षेत्रों में ज्ञान होना चाहिए, बल्कि कक्षाओं के प्रशासन, समावेशी शिक्षा के कार्यान्वयन और प्रौद्योगिकी के उपयोग में भी कुशल होना चाहिए (सिंह, 2020)। नीति में यह सिफारिश की गई है कि प्रशिक्षक एक एकीकृत बैचलर ऑफ एजुकेशन कार्यक्रम में भाग लें, जो चार साल तक

चलता है और इसमें अनिवार्य घटकों के रूप में कक्षा प्रबंधन, समावेशिता, नेतृत्व और डिजिटल शिक्षण क्षमताएं शामिल होती हैं (गुप्ता, 2021)। इसके अतिरिक्त, नीति ने शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development - CPD) अनिवार्य कर दिया गया है, और यह कक्षा प्रबंधन की उन्नत तकनीकों, विभिन्न पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों के साथ जुड़ने की रणनीतियों और डिजिटल शिक्षा संसाधनों के उपयोग पर नियमित प्रशिक्षण देने का वादा करता है (दास, 2021)।

SCERTs, NCERT और NCTE जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं ने भी शिक्षक प्रशिक्षण में कक्षा प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने हेतु मापदंड तय किए हैं। NCTE कक्षा प्रबंधन एक अलग पाठ्यक्रम है जिसे शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम रूपरेखा में शामिल किया गया है जिसे वर्ष 2018 में भारत सरकार द्वारा जारी किया गया था। यह पाठ्यक्रम शिक्षकों को कक्षा में अपने व्यवहार का प्रबंधन करने के तरीके सिखाने पर केंद्रित है, साथ ही कक्षा के प्रबंधन के लिए रणनीतियों और विविध कक्षा वातावरण में शिक्षण के तरीकों पर भी ध्यान केंद्रित करता है (राणा, 2019)। NCERT ने अपनी प्रशिक्षण पुस्तिकाओं में शिक्षकों के लिए व्यवहारिक कक्षा प्रबंधन पर आधारित मॉड्यूल विकसित किए हैं, जिनमें समावेशी रणनीतियाँ, सहानुभूति आधारित अनुशासन, और तकनीकी उपकरणों के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर बल दिया गया है (शाह, 2018)। वहीं, SCERTs ने राज्य स्तर पर शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पुनर्गठन करते हुए क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार कक्षा प्रबंधन के विभिन्न आयामों को पाठ्यक्रमों में जोड़ा है (मलिक, 2020)। इन संस्थाओं के प्रयासों के परिणामस्वरूप, शिक्षक प्रशिक्षण अब शैक्षिक प्रणाली में आने वाली कठिनाइयों के लिए अधिक उपयुक्त, प्रासंगिक और उपयुक्त हो गया है।

भारत सरकार द्वारा ई-प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी कई प्रयास किए गए हैं। इन पहलों का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण की पहुँच और गुणवत्ता को बढ़ाना है। आज, 2017 में शुरू किया गया DIKSHA प्लेटफ़ॉर्म शिक्षकों को कक्षा प्रबंधन, डिजिटल लर्निंग, मूल्यांकन पद्धति और नेतृत्व क्षमता सहित कई विषयों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रदान करता है (गोस्वामी, 2019)। इस प्लेटफॉर्म ने विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण को संभव बनाया। इसके अलावा, स्वयं (SWAYAM) जैसे ऑनलाइन पोर्टल्स के माध्यम से भी शिक्षकों के लिए कक्षा प्रबंधन से संबंधित कई पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए गए हैं (जोशी, 2020)। सरकारी रिपोर्टों से पता चलता है कि वर्ष 2021 तक पचास लाख से अधिक शिक्षक दीक्षा प्लेटफॉर्म पर आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण मॉड्यूल को सफलतापूर्वक पूरा कर लेंगे। कक्षा प्रबंधन से संबंधित कार्यक्रम विशेष रूप से लोकप्रिय साबित हुए हैं (शर्मा, 2021)।

परिणामस्वरूप, यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के माध्यम से भारत में कक्षा प्रबंधन प्रशिक्षण को एक मजबूत और व्यवस्थित दिशा प्रदान करने का प्रयास किया गया है। जमीनी स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, फीडबैक तंत्र की स्थापना और प्रशिक्षकों की गुणवत्ता में निरंतर वृद्धि, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की दक्षता की गारंटी के लिए सभी आवश्यक घटक हैं।

6. व्यवहारिक चुनौतियाँ और भविष्य के अवसर

21वीं सदी में शैक्षिक माँगों में आए बदलाव के परिणामस्वरूप शिक्षक तैयारी के पारंपरिक मानकों को पूरी तरह से संशोधित किया गया है। उम्मीद है कि शिक्षकों को न केवल अपने विषयों के बारे में जानकारी होनी चाहिए, बल्कि नवाचार को अपनाने की क्षमता, डिजिटल साक्षरता, सामाजिक-भावनात्मक समझ, विविधता प्रबंधन और विविधता को प्रबंधित करने की क्षमता जैसी बहुआयामी क्षमताएँ भी प्रदर्शित करनी चाहिए। अब शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे विद्यार्थियों की बहुमुखी शिक्षण शैलियों, छात्रों की विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और उपलब्ध प्रौद्योगिकी उपकरणों को समायोजित करने के लिए अपने ज्ञान को लगातार अपडेट करते रहें। परिणामस्वरूप, मौजूदा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक लागू, बहु-विषयक और भविष्य की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक बनाना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों की स्वायत्तता, आत्म-प्रेरणा और निर्णय लेने की क्षमता का विकास प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का प्राथमिक जोर होना चाहिए ताकि वे ऐसे वातावरण में सफलतापूर्वक काम कर सकें जो तेजी से गतिशील होता जा रहा है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी के आगमन ने शिक्षकों की शिक्षा के लिए असाधारण संभावनाएँ खोल दी हैं। ऑनलाइन प्रशिक्षण प्लेटफ़ॉर्म, वेबिनार, ई-लर्निंग मॉड्यूल, मोबाइल एप्लिकेशन और वर्चुअल क्लासरूम की उपलब्धता ने प्रशिक्षण पद्धतियों की बेहतर पहुँच और अनुकूलनशीलता में योगदान दिया है। शिक्षक डिजिटल प्रशिक्षण का उपयोग करके अपनी गति से और किसी भी स्थान से अध्ययन करने में सक्षम हैं, जो उन्हें जब भी और जहाँ भी वे चाहें सीखने की अनुमति देता है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षकों को नवीनतम अनुदेशात्मक प्रथाओं, डिजिटल तकनीकों के उपयोग और समावेशी कक्षा प्रबंधन तकनीकों से परिचित होने का अवसर मिलता है। इसके बावजूद, डिजिटल निर्देशों से जुड़ी कुछ बुनियादी सीमाएँ हैं। ऐसे कई कारक हैं जो कई शिक्षकों को डिजिटल प्रशिक्षण को ठीक से लागू करने से रोकते हैं, जिसमें तकनीकी बुनियादी ढाँचे की कमी, डिजिटल साक्षरता की कमी और स्व-प्रेरित सीखने के लिए आवश्यक अनुशासन की कमी शामिल है। इसके अतिरिक्त,

डिजिटल प्रशिक्षण मानवीय संबंध या व्यावहारिक अनुभव का अवसर प्रदान नहीं करता है, जो दोनों ही व्यवहार-केंद्रित कौशल जैसे कक्षा प्रबंधन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

इन कठिनाइयों के मद्देनजर, यह स्पष्ट है कि नीति में सुधार की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षक तैयारी से संबंधित नियमों में डिजिटल और व्यावहारिक कारकों के बीच संतुलन बनाना होगा। केवल ऑनलाइन प्रशिक्षण पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा; बल्कि, ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रशिक्षण को मिलाकर मिश्रित शिक्षा को अपनाया जाना चाहिए। दूसरी ओर, नीतियों को शिक्षकों की स्थानीय मांगों, सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता और संसाधन प्रतिबंधों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाने का प्रयास करना महत्वपूर्ण है जो प्रत्येक व्यक्तिगत राज्य, क्षेत्र और शैक्षिक वातावरण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किए गए हों। इसके अलावा, प्रशिक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाने, प्रशिक्षण के बाद अनुवर्ती सहायता प्रदान करने और प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षकों के लिए पेशेवर उन्नति के अवसर प्रदान करने के लिए नीतियां तैयार की जानी चाहिए। भारत में शिक्षक शिक्षा संस्थान को भविष्य में किसी समय निरंतर सुधार की संस्कृति को अपनाने की आवश्यकता होगी। एक ऐसा प्रशिक्षण ढांचा बनाना आवश्यक होगा जो अनुकूलनीय और प्रगतिशील दोनों हो, साथ ही इसमें आत्म-मूल्यांकन, सहयोगात्मक शिक्षण, विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार जैसे तत्व भी शामिल हों। उसके बाद, और केवल तभी, शिक्षक कक्षा प्रबंधन के मुद्दों का सामना करने में सक्षम होंगे जो 21वीं सदी में प्रस्तुत होते हैं, और वे शिक्षा प्रणाली को एक ऐसी दिशा में ले जाने में सक्षम होंगे जो गुणात्मक और समावेशी दोनों हो।

7. निष्कर्ष

वैज्ञानिक अध्ययन में 21वीं सदी में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा कक्षा प्रबंधन क्षमताओं के विकास में योगदान देने के तरीकों की व्यापक समीक्षा की गई। शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट हो गया कि अनुशासन पर केंद्रित पुराने कक्षा प्रबंधन दृष्टिकोण अब शिक्षा प्रणाली की जटिल आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं थे। शिक्षकों को अब सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा, कंप्यूटर साक्षरता, समावेशी शिक्षण और विविधता प्रबंधन जैसी बहुआयामी क्षमताएँ हासिल करने की आवश्यकता थी। वर्तमान स्थिति के कारण ये योग्यताएँ महत्वपूर्ण थीं। इसके अलावा, शोध ने विषय के ऐतिहासिक संदर्भ के साथ-साथ समकालीन विकास, अंतर्राष्ट्रीय नीति ग्रंथों की सिफारिशों और भारत में शिक्षा नीति 2020 जैसी पहलों का गहन विश्लेषण किया। इस अध्ययन के परिणामों ने और सबूत दिए कि 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली के लिए अच्छे कक्षा प्रबंधन

प्रशिक्षण कार्यक्रम एक परम आवश्यकता हैं। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षक ने न केवल एक कुशल शिक्षण वातावरण प्रदान किया, बल्कि उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि उनके छात्र बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से प्रभावी ढंग से विकसित हो रहे हैं। आत्म-अनुशासन, सहभागिता, समस्याओं को हल करने की क्षमता और सहानुभूति कुछ ऐसे गुण थे जो शिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली कक्षा प्रबंधन युक्तियों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में पैदा हुए। ये रणनीतियाँ आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप थीं। इस कारण, यदि कुशल कक्षा प्रबंधन प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया जाता तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता।

शोध के निष्कर्षों के आधार पर, नीति, शैक्षणिक और संस्थागत सुधारों के लिए कई सिफारिशें की गईं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, प्रशिक्षण सत्रों को स्थानीय समुदाय के लिए अधिक सहभागी, व्यावहारिक और प्रासंगिक बनाना आवश्यक था। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में कक्षा प्रबंधन को एक अलग और अनिवार्य घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए था, जिसमें डिजिटल प्रौद्योगिकियों, समावेशी शिक्षा प्रथाओं और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) के सिद्धांतों के उपयोग पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए था। दूसरा, शिक्षकों को वर्तमान समय के लिए प्रासंगिक कौशल हासिल करने के लिए, निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को नियमित आधार पर अनिवार्य और आवश्यक बनाया जाना चाहिए था। तीसरा, प्रशिक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए, लगातार मूल्यांकन, क्षमता निर्माण और फीडबैक के लिए मौजूद प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना आवश्यक था। इसके अलावा, यह सुझाव दिया गया कि प्रशिक्षण के अंतिम परिणामों का मूल्यांकन करने के लिए उचित निगरानी और मूल्यांकन पद्धतियाँ स्थापित की जाएँ। यह भी सुझाव दिया गया कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों संदर्भों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मजबूत किया जाए और सिफारिशें पेश की गईं। भारत में शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को और अधिक पेशेवर, टिकाऊ और नवाचार-उन्मुख बनाने की आवश्यकता है। फिनलैंड, सिंगापुर और कनाडा के मॉडल जैसे वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं से प्रेरणा लेकर इसे पूरा किया जा सकता है। सार्वजनिक नीति तैयार करने के प्रभारी लोगों को प्रशिक्षण की गुणवत्ता को प्राथमिकता देनी चाहिए और साथ ही डिजिटल और भौतिक दोनों माध्यमों से प्रशिक्षण तक पहुँच को व्यापक बनाना चाहिए। स्कूलों के लिए संस्थागत स्तर पर नवाचार के लिए प्रोत्साहित करने वाला और अनुकूल माहौल बनाना भी महत्वपूर्ण है। इससे शिक्षकों को अपने द्वारा अर्जित नए कौशल का सफलतापूर्वक उपयोग करने में मदद मिलेगी।

अंततः, यह निष्कर्ष निकाला गया था कि यदि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को वैश्विक मानकों के अनुरूप पुनर्गठित और सुदृढ़ किया जाए, तो न केवल कक्षा प्रबंधन में सुधार संभव है, बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता, समावेशन और नवाचार का स्तर भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- UNESCO. (2021)। Teachers' Readiness for 21st Century Classrooms: A Global Report. Paris: UNESCO।
- अग्रवाल, एन. (2022)। SEL आधारित शिक्षण मॉडल और छात्र व्यवहार सुधार। *शिक्षा सिद्धांत संवाद*, 23(1), 34–51।
- कुमार, आर. (2018)। स्मार्ट शिक्षा और कक्षा व्यवहार: एक अध्ययन। *शिक्षा नवाचार पत्रिका*, 19(2), 29–46।
- गुप्ता, आर. (2021)। शिक्षक शिक्षा में नीति सुधारों का प्रभाव। *शिक्षा नीति संवाद*, 23(2), 32–47।
- गुप्ता, ए. (2017)। फिनलैंड का शिक्षक प्रशिक्षण मॉडल: एक अध्ययन। *शिक्षक शिक्षा समीक्षा*, 19(4), 30–47।
- गोस्वामी, एम. (2019)। डिजिटल प्रशिक्षण प्लेटफॉर्म और शिक्षकों का सशक्तिकरण। *डिजिटल शिक्षा विश्लेषण*, 21(3), 31–47।
- गोस्वामी, एम. (2020)। विविध कक्षा प्रबंधन तकनीकों का अध्ययन। *भारतीय शिक्षा विकास पत्रिका*, 21(2), 35–50।
- चक्रवर्ती, ए. (2021)। विविधता और समावेशन पर आधारित कक्षा प्रबंधन। *शिक्षण नवाचार पत्रिका*, 23(3), 35–51।
- चतुर्वेदी, एस. (2019)। व्यावहारिक कार्यशालाओं का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव। *समकालीन शिक्षा विश्लेषण*, 20(4), 32–49।
- जोशी, एस. (2018)। शिक्षक प्रशिक्षण में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्थान। *शिक्षक विकास पत्रिका*, 20(1), 31–46।
- जोशी, बी. (2020)। स्वयं और दीक्षा के माध्यम से शिक्षक विकास। *ऑनलाइन शिक्षा पत्रिका*, 22(1), 28–44।
- डेसाई, एन. (2020)। OECD TALIS रिपोर्ट और शिक्षक प्रशिक्षण सुधार। *अंतरराष्ट्रीय शिक्षा विश्लेषण*, 22(1), 32–49।
- त्रिपाठी, के. (2021)। भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण में वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं का समावेशन। *शिक्षण नवाचार संवाद*, 23(3), 34–51।
- दत्ता, आर. (2018)। समावेशी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका। *समावेशी शिक्षा विश्लेषण*, 19(4), 31–45।
- दास, पी. (2021)। शिक्षक सतत व्यावसायिक विकास और नीति की दिशा। *शिक्षा नवाचार पत्रिका*, 23(3), 35–49।

- नंदा, पी. (2019)। यूडीएल मॉडल और विविधतापूर्ण अधिगम रणनीतियाँ। *शिक्षा सुधार समीक्षा*, 20(3), 30–48।
- नायर, के. (2021)। इन-सर्विस प्रशिक्षण और शिक्षण व्यवहार में सुधार। *नई शिक्षा विश्लेषण*, 22(4), 31–47।
- नेगी, पी. (2020)। सिमुलेशन आधारित प्रशिक्षण तकनीकों का मूल्यांकन। *शिक्षा और प्रौद्योगिकी पत्रिका*, 21(1), 30–48।
- पटनायक, एस. (2018)। विकासशील देशों में कक्षा प्रबंधन चुनौतियाँ। *शिक्षा विकास पत्रिका*, 20(3), 31–48।
- पाठक, एन. (2019)। शिक्षार्थी केंद्रित कक्षा प्रबंधन के नए दृष्टिकोण। *शिक्षण सुधार संवाद*, 21(4), 30–48।
- भाटिया, ए. (2020)। सामाजिक भावनात्मक अधिगम और शिक्षा प्रणाली में उसका महत्व। *नई शिक्षा विचारधारा*, 21(4), 31–48।
- भानु, ए. (2021)। इंटर्नशिप अनुभव और कक्षा प्रबंधन कौशल विकास। *शिक्षक विकास संवाद*, 22(3), 34–50।
- भारत सरकार. (2022)। राष्ट्रीय शिक्षा रिपोर्ट 2022: शिक्षक प्रशिक्षण और दक्षता विश्लेषण। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
- मलिक, एस. (2020)। राज्य स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण में नवीन परिवर्तन। *शिक्षा और विकास समीक्षा*, 22(2), 33–50।
- मिश्रा, वी. (2018)। कक्षा प्रबंधन रणनीतियाँ: एक प्रशिक्षण दृष्टिकोण। *भारतीय शिक्षा अध्ययन*, 19(3), 28–46।
- मेहता, एस. (2018)। प्री-सर्विस शिक्षक प्रशिक्षण में व्यवहारिक शिक्षा का महत्त्व। *शिक्षण अध्ययन पत्रिका*, 19(2), 29–45।
- यादव, वी. (2019)। भारतीय विद्यालयों में तकनीक आधारित अधिगम रणनीतियाँ। *शिक्षा और समाज पत्रिका*, 20(1), 33–50।
- राणा, ए. (2019)। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में कक्षा प्रबंधन का समावेश। *शिक्षण अध्ययन पत्रिका*, 21(1), 31–46।
- राय, डी. (2019)। 21वीं सदी में बहु-सांस्कृतिक कक्षा प्रबंधन। *शिक्षा और समाज अध्ययन*, 21(1), 34–50।
- रेड्डी, पी. (2019)। कक्षा प्रबंधन और वैश्विक शैक्षिक प्रथाएँ। *शिक्षा नीति संवाद*, 21(2), 30–46।
- वर्मा, के. (2018)। आधुनिक शिक्षा में शिक्षक व्यावसायिकता का महत्त्व। *शिक्षा समीक्षा पत्रिका*, 20(2), 30–47।

- शर्मा, डी. (2021)। कक्षा में SEL के एकीकरण का व्यवहारिक विश्लेषण। *शिक्षण प्रबंधन अध्ययन*, 22(2), 30–49।
- शर्मा, पी. (2017)। भारतीय विद्यालयों में कक्षा प्रबंधन कौशल का विकास। *शिक्षा नीति संवाद*, 19(3), 32–48।
- शर्मा, वी. (2021)। कोविड-19 और भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण में डिजिटल परिवर्तन। *समकालीन शिक्षा विश्लेषण*, 23(4), 34–50।
- शाह, डी. (2018)। व्यवहारिक शिक्षण और कक्षा प्रबंधन मॉड्यूल। *शिक्षा सुधार पत्रिका*, 20(4), 30–45।
- शेख, डी. (2019)। फिनलैंड और भारत में शिक्षक प्रशिक्षण तुलना। *शिक्षा तुलनात्मक अध्ययन*, 21(1), 33–50।
- शेखर, एस. (2017)। डिजिटल तकनीक और कक्षा प्रबंधन में नवीन प्रवृत्तियाँ। *समकालीन शिक्षा समीक्षा*, 18(3), 32–47।
- सक्सेना, आर. (2022)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली में सुधार। *नई शिक्षा विश्लेषण*, 24(2), 30–48।
- सक्सेना, एन. (2017)। शिक्षक शिक्षा में कक्षा प्रबंधन कौशल का एकीकरण। *शिक्षा नवाचार समीक्षा*, 18(2), 30–47।
- सहगल, एम. (2022)। 21वीं सदी के शिक्षक के लिए कक्षा प्रबंधन के नवाचार। *डिजिटल शिक्षा विश्लेषण*, 24(2), 29–45।
- सिंह, के. (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक विकास। *नई शिक्षा समीक्षा*, 22(1), 30–48।
- सिन्हा, वी. (2020)। सिंगापुर का टीचर ग्रोथ मॉडल और शिक्षा गुणवत्ता। *एशियाई शिक्षा समीक्षा*, 22(2), 29–46।
- सैनी, आर. (2020)। डिजिटल कक्षा प्रबंधन रणनीतियाँ। *समकालीन शिक्षा विश्लेषण*, 22(4), 33–49।